Deg-2
Hist (Hons)

(1)

खिलजी साम्राज्य

उदय एवं विस्तार →

खिलजी साम्राज्य की स्थापना जलालउद्दीन खिलजी ने 70 वर्ष की अवस्था में 1290 ई० में की। बुगरा खाँ के पुत्र कैकुबाद के समय से ही सल्तनत में अराजकता और अस्थिरता की स्थिति पैदा हो गई थी। प्रशासन की सारी शक्ति निजाम उद्दीन के हाथों में केन्द्रित हो गई थी। सामंतो के असंतोष और आपसी वैमनस्यता बढ़ गई थी। कुछ सामन्तो ने जलालउद्दीन फिरोज खिलजी के नेतृत्व में ऐतमार कच्छन और ऐतमार सुरखा को मार डाला। कैकुबाद को मार डाला गया। कैकुबाद के पुत्र कयूमार को रास्ते में हटा कर 13 जून 1290 ई० को जलालउद्दीन फिरोज सुल्तान बना।

दिल्ली के नागरिकों ने जलालउद्दीन का कोई स्वागत नहीं किया क्योंकि वह अफगान था इसलिए उसने किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया, लेकिन जियाउद्दीन बर्नी लिखता है कि उसके सदगुणों न्यायप्रियता और समर्पण की भावना ने उसे दिल्ली के नागरिकों का प्रिय बना दिया था।

इस बूढ़े सुल्तान को अपने शासन के दूसरे ही वर्ष में बलबन के भतीजे मलिक छज्जू के विद्रोह का सामना करना पड़ा। उसने विद्रोह को दबा दिया और

मलिक छज्जू को माफ कर दिया। जलालउद्दीन की नीतियों के कारण दरबार में षड्यन्त्र होने लगे।

जलालउद्दीन ने किसी साम्राज्यवादी नीति का पालन तो नहीं किया लेकिन रणथम्भौर पर असफल आक्रमण किया। उसके समय में हलाकू ने आक्रमण किया था तब उसने उसका सफलतापूर्वक मुकाबला किया था। उलगू ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया और दिल्ली के समीप अपने समर्थकों के साथ बस गया। इन नए मुसलमानों ने बाद में दिल्ली में खूब उपद्रव मचाया। यह शांतिप्रिय शासक अपनी मौत नहीं मरा बल्कि इसके महत्वकांक्षी प्रिय भतीजे अली गुर्शप जो आगे चलकर अलाउद्दीन खिलजी के नाम से जाना गया, ने धोखे से 1296 ई में मार डाला।